वर्ष :4; अंक : 1

सहोदरी

भाषा सहोदरी हिंदी

विषय-सूची

संदेश	3
संपादक की कलम से...	4
उप-संपादक की कलम से...	5
"भारत में हिन्दी की स्थिति-दक्षिण भारत के विशेष संदर्भ में" *डॉ. रेनू रानी शुक्ला*	7
हिंदी - राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय परिदृश्य में एक अवलोकन *अरविन्द कुमार गुप्ता*	10
विश्व में हिंदी भाषा के महत्व *रेखा. पी. मेनोन*	13
हिन्दी भाषा और रोजगार *डॉ. अनिता एस. कर्पूर*	18
विश्व भाषा हिन्दी *डॉ. अरूणा हेरेमत*	21
हिन्दी भाषा की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति *डॉ. रवी कुमार*	23
न्यायालयों में हिंदी कार्रवाई की सार्थकता *डॉ. टी. सुमती*	26
भारत में हिन्दी की स्थिति *हेम लता*	28
हिन्दी हमारी पहचान है *टी. निरंजन*	29
विश्व में हिन्दी भाषा के महत्व *प्रोफेसर शर्मिला बिस्सा*	31
राष्ट्रीय स्वभिमान हिन्दी *डॉ. शिवहर बिरादर*	34
दक्षिण भारत में हिंदीः दशा और दिशा *डॉ. के. श्याम सुन्दर*	36
दक्षिण भारत में शिक्षा एवं शिक्षण के सन्दर्भ में हिंदी *सुनील कुमार यादव*	38
भारत में हिंदी की स्थिति *डॉ. रश्मि नायर*	43
भारत में हिन्दी की स्तिथी *सविता कुमारी*	45
भारत में हिन्दी की स्थिति *लाऊरि विजय लक्ष्मी*	47
विश्व में हिंदी भाषा के महत्व *विजया चांदावत*	50
हिन्दी इस देश की आत्मा है। *डॉ. टी. श्रीनिवासुलु*	52
विश्व में हिन्दी भाषा के महत्व *जि. आर. सर्वमंगला*	56
हिंदी हमारी पहचान है *प्रमोद नाग*	59
भारत में हिंदी की स्थिति *डॉ. कविता पनिया*	61
भारत में हिन्दी की स्थिति *प्रो. एन. शान्ति कोकिला*	63
विश्व मे हिंदी भाषा के महत्व *गीता शास्त्री*	66
वर्तमान शिक्षा में हिन्दी का महत्व *डॉ. आर. पद्मा*	68
हिन्दी और भारतीय भाषाओं में आपसदारी विशेष रूप से उर्दू के संदर्भ में *प्रो. मुमताज बेगम एस.एम*	70
मलयालम एक भारतीय भाषाः उद्भव एवं विकास *प्रकाश नीरव*	73

विश्व भाषा हिन्दी

डॉ. अरूणा हेरेमत
विभागाध्यक्ष, एल. वी. डी. कॉलेज
रायपूर, कर्नाटक
दूरभाषः 08277622133

भाषा के बिना मनुष्य, परिवार, समाज, देश, संपूर्ण विश्व गूंगा है। इसलिए भाषा या वाणी को अनादिकाल से अत्याधिक महत्व दिया गया है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते उसे एक दूसरे से संपर्क स्थापित करने के साथ-साथ एक दूसरे पर अवलंबित भी रहना पड़ता है। बिना भाषा या अन्य पर अवलंबित रहे, वह अपना जीवन-यापना नहीं कर सकता। अतः संबंध स्थापित करने तथा दूसरों पर अवलंबित रहने का सबसे सशक्त तथा सार्थक माध्यम एक मात्र भाषा ही है।

परंतु यह भाषा कैसी हो? सांकेतिक भाषा, मातृभाषा, प्रांतीय भाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा के कई प्रकार हमें देखने में आते हैं। मनुष्य द्वारा संपूर्ण विश्व में बोली जानेवाली भाषा इतनी सार्थक होते हुये भी, अनादिकाल से लेकर आज के इस भूमंडलीकरण, आर्थिक उदारीकरण, वैज्ञानिक तथा दूरसंचार क्रांति के युग तक आते-आते विश्व की विभिन्न भाषाओं में अपनी-अपनी विशेषताओं और आवश्यकताओं को लेकर एक स्पर्धा चलने लगी है।

दुनियाँ जैसे-जैसे ग्लोबल होती जा रही है, वैसे-वैसे हिन्दी की माँग भी बढ़ती जा रही है। विश्व के अनेक देशों में आज हिन्दी बोली तथा पढ़ाई जाती है। इसके लिए स्वयं उसकी अपनी विशेषताएँ है जिन्होंने उसे उस स्थान पर स्थापित कर दिया है।

हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। पहला स्थान चीनी का, दूसरा स्थान हिन्दी का तथा तीसरा स्थान अंग्रेजी का है। वस्तुस्थिति यह रहने से ही आज उसकी लोकप्रियता बढी है। भारत से बाहर करीब 170 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन और अध्यापन का कार्य विगत अनेक वर्षों से नियमित रूप से चल रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा उसकी माँग दिन प्रतिदिन बढती जा रही है।

अमेरिका, लंडन, इंग्लैड, ब्रिटेन, कैनडा, नीदरलैंड, स्वीडन, जर्मनी, नार्वे, थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, इटली, रूस, चीन, युगोसविया, मंगोलिया, रोमानिया, ऑस्ट्रिया, पोलैण्ड, संयुक्त राज्य अमेरिका, मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड, म्याँनमार, सिंगापुर, मलेशिया, फीजी आदि देशों में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन होने के साथ-साथ हिन्दी में अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं तथा वहाँ के राष्ट्रीय चौनेलों रेडियों आदि पर हिन्दी के कार्यक्रम नियमित प्रसारित होते हैं।

थाईलैण्ड में हिन्दी जानने वालें की संख्या एक लाख से भी अधिक है। मॉरिशस में आज भी हजारों व्यक्ति हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की परीक्षाओं में भाग लेते है। फीजी नामक द्वीप में अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, "साथ ही वहाँ के बाजारों के नामफलक अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में लिखे होते है।"

जापान के विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं में हिन्दी पढाई जाती है। विगत 20 वर्षों से यहाँ से "सर्वोदय" पत्रिका प्रकाशित हो रही है।

लंदन विश्वविद्यालय का "स्कूल ऑफ ओरिएण्टल एण्ड ऑफ्रिकन स्टडीज" जो कि एक प्राचीन संस्था है, यहाँ भी हिन्दी अध्ययन-अध्यापन का कार्य नियमित रूप से विगत कई दशकों से हो रहा है।

जर्मनी के 17 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के स्वतंत्र विभाग हैं। इंग्लैड में अंग्रेजी के पश्चात सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याती प्राप्त यहाँ का न्यूज चौनाल बी.बी. सी. पर महाभारत इतना लोकप्रिय हुआ जिसे कई बार प्रसारित किया गया था।

इटली में भारतीय दर्शन और साहित्य के प्रति विशेष आकर्षण है। यहाँ के विश्वविद्यालयों में भी अनेक छात्र हिन्दी के माध्यम से अध्ययन-अध्यापन कर रहे हैं। सोवियत संघ के अलावा मंगोलिया, रोमानिया, ऑस्ट्रिया, पोलैण्ड आदि पूर्वी यूरोपीय देशों के छात्र हिन्दी सीखने के लिए लेनीनग्रड अथवा मॉस्को विश्वविद्यालय आते हैं। इतना ही नहीं, हिन्दी भाषा का अनुवाद जितना रूसी भाषा में हुआ है उतना संसार की किसी भी भाषा में नहीं हुआ। रूस, भारत के करीब आने में यह भी एक कारण रहा है।

ये सभी बातें दर्शाती हैं कि हिन्दी भाषा विश्व की सर्वमान्य भाषा है, लोकप्रिय भाषा है। भारतीय फिल्में विश्व के कोने-कोने में लोकप्रियता पा रहे हैं। विदेशियों की जुबान पर हिन्दी गीत, संवाद, फिल्मों, अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के नाम लोकप्रिय हैं। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगान, देवदास, तारे जमीन पर जैसी फिल्में ऑस्कर प्रतियोगिता की दौड़ में थी। हाल ही में स्लम डॉग को मीलेनियम ऑस्कर अवार्ड से नवाजा गया है।

हमें अंग्रेजी से विरोध नहीं है बल्कि अंग्रेजी और कम्प्यूटर आदि ज्ञान आज की माँग हैं, लेकिन हमें सबसे पहले अपनी मातृभाषा, तत्पश्चात् प्रांतीय भाषा, इसके बाद राष्ट्रीय भाषा, इसके बाद किसी अन्य आवश्यक भाषा या अंतर्राष्ट्रिय भाषा को महत्व देना चाहिए। लेकिन हमारी सोच और प्रक्रिया इस मामले में उल्टी है, अर्थात पहले अंतर्राष्ट्रीय भाषा बाद में राष्ट्रीय भाषा तत्पश्चात् प्रांतीय तथा मातृभाषा। यह पद्धति किसी भी देश के नागरिक के लिए उचित नहीं है। तभी तो भारतेंदु हरिश्चंद्रजी ने कहा था-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, रहत हिय को शूल।

व्यावहारिक, व्याकरणिक और लिपि की दृष्टि से हिन्दी भाषा की तुलना यदि अन्य भाषाओं के साथ करें तो हिन्दी काफी वैज्ञानिक, सरल, स्पष्ट तथा व्यावहारिक है। हिन्दी की देवनागरी लिपि काफी समृद्ध और क्षमतावान है। इसकी विशेषता यह है कि इसे बोलते समय जितनी ध्वनियाँ निकलती हैं उतने ही शब्द भी उपलब्ध हैं, परंतु अंग्रजी, फ्रेंच या अन्य भाषाओं में यह विशेषता नहीं है।

हमें हिन्दी फिल्में, धारावाही, नेता, अभिनेता, गीत सभी पसंद हैं लेकिन हिन्दी पसंद नहीं है। यह एक अजीबोगरीब अवस्था है। इसके बावजूद हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा उसे समृद्ध करने का काम जितना अहिन्दी भाषी प्रान्तों से हो रहा है उतना हिन्दी भाषी प्रांतों से नहीं। इस बात पर भी हमें ध्यान देने की आवश्यकता है।

⌘⌘⌘

भाषा सहोदरी हिंदी

सी-36-बी, अप्पर ग्राउण्ड, जनता गार्डन, मयूर विहार-1, नई दिल्ली-110091

मो॰ : 9811972311, 9599303676 Email : sahodaribhasha@gmail.com Website : bhashasahodarihindi.org